बहूनिबहुरूपाणिविरजांसिसमाददे॥ १॥ ततोवायुर्महान्शीघोनीचैःशर्करकर्षणः॥ प्राहुरासीहरस्पर्शःसंग्राममिभचोदयन्॥ २॥ भूयवशीकृत्यचेत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ कामात्कामायस्वेष्टसित्ध्यर्थं ॥ २६ ॥ २७ ॥ इत्यार • नै • भा • चतुष्यंचाशदिधकशततमोऽध्यायः ॥ १५४ ॥ ॥ छ ॥ सतइति ॥ १ ॥ २ ॥